"प्राप्ती"

• नराइन नरपति नमसकारै । ऐसे गुर कउ बलि जाईऐ आपि मुकत मोहि तारै ।

अर्थः- हे भाई ! प्रभु के बेअंत रंग देख - देख के जो गुरु प्रभु पातशाह को सदा सिर निवाता रहता है, जो नाम की इनायत से दुनिया के बंधनो से स्वयं निर्लिप है और मुझे पार लंघाने की समर्थता रखता है, उस गुरु से सदा ही बलिहार जाना चाहिए ।

कवन - कवन - कवन गुन कहीऐ अंत नही कछ पारे । लाख - लाख - लाख कई कोरै को है ऐसो बीचारे ।

अर्थः- हे भाई ! लाखों लोगों में करोड़ों लोगों में से कोई विरला ऐसा मनुष्य होता है, जो ऐसा सोचता है कि परमात्मा के सारे गुण बयान नहीं किए जा सकते, परमात्मा के गुणों का अंत नहीं पाया जा सकता, परमात्मा के गुणों का परला छोर नहीं मिल सकता ।

बिसम - बिसम - बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै । कहु नानक संतन रस आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ।

अर्थः- हे भाई ! सोहाने प्रभु और सुंदर प्रभु के आश्चर्यजनक करिश्मों को देख के हैरान हो जाया जाता है । हे नानक ! कह संत जनों को आत्मिक जीवन देने वाले नाम जल का स्वाद आता है पर, इस स्वाद को वे बयान नहीं कर सकते जैसे कोई गूँगा मनुष्य कोई स्वादिष्ट पदार्थ चख के सिर्फ मुस्करा ही देता है पर स्वाद को बयान नहीं कर सकता ।

न जानी संतन प्रभ बिन आन । ऊंच नीच सभ पेखि समानो मुखि बकनो मनि मान ।

अर्थः- हे भाई ! संतजनों ने प्रभु के बिना किसी और को कहीं बसता नहीं जाना । संतजन ऊँचे - नीचे सब जीवों में सिर्फ परमात्मा को एक समान बसता देख के मुँह से परमात्मा का नाम उचारते हैं और अपने मन में उसका ध्यान धरते हैं ।

घटि घटि पूरि रहे सुख सागर भै भंजन मेरे प्रान । मनहि प्रगास भइओ भ्रम नासिओ मंत्र दीओ गुर कान ।

अर्थः- हे भाई ! मेरे प्राणों से प्यारे प्रभु जी, सारे डर दूर करने वाले प्रभु जी, सारे सुखों के समुंदर प्रभु जी हरेक शरीर में मौजूद हैं जिसके अंदर परमात्मा गुरु का शब्द पक्का कर देता है, उनके मन में आत्मिक जीवन की सूझ का प्रकाश पैदा हो जाता है उनके अंदर से भटकना दूर हो जाती है ।

करत रहे कृतग्य करुणा मै अंतरजामी ग्यिान । आठ पहर नानक जस गावै मांगन कउ हरि दान ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा के किए को जानने वाले संत जन अंतरजामी करुणामय परमात्मा के गुणों की बातें करते रहते हैं । नानक भी परमात्मा के नाम का दान माँगने के लिए आठों पहर उसकी महिमा का गीत गाता रहता है ।

साजन-मीत-सुआमी नेरो । पेखत सुनत सभन के संगे थोरै काज बुरो कह फेरो ।

अर्थः- हे भाई ! सबका सज्जन - मित्र मालिक प्रभु हर वक्त तेरे नजदीक बस रहा है । वह सब जीवों के साथ बसता है सबके कर्म देखता है सबकी सुनता है थोड़ी से जिंदगी के मनोरथों की खातिर बुरे काम क्यों किए जाएं ? ।

नाम बिना जेतो लपटाइओ कछु नही नाही कछु तेरो । आगै दिसटि आवत सभ परगट ईहा मोहिओ भरम अंधेरो ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना और जितने भी पदार्थों के साथ तू चिपक रहा है उनमें से तेरा आखिर कुछ भी नहीं बनना यहाँ तू माया के मोह में फंस रहा है भ्रमों के अंधकार में ठोकरें खा रहा है पर परलोक में यहाँ का किया हुआ सब कुछ प्रत्यक्ष तौर पर दिखाई दे जाता है ।

अटकिओ सुत बनिता संग माइआ देवनहार दातार बिसेरो । कह नानक एकै भारोसउ बंधन काटनहार गुर मेरो ।

(5-1301-1303)

अर्थः- हे भाई ! तू पुत्र - स्त्री और माया के मोह में आत्मिक जीवन के पथ पर से रुका हुआ है, सब कुछ दे सकने वाले दातार - प्रभु को भुला रहा है । हे नानक ! कह हे भाई ! सिर्फ एक गुरु परमेश्वर का भरोसा रख । प्यारा गुरु माया के सारे बंधन काटने की समर्थता रखने वाला है उसी की शरण पड़ा रह ।

• फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगास । काटी बेरी पगह ते गुर कीनी बदि खलास ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु ने जिस मनुष्य के पैरों से मोह की बेड़ियाँ काट दीं, जिसको मोह की कैद से आजाद कर दिया, उसके मन में आत्मिक जीवन की सूझ पैदा हो गई, उसका भ्रम भटकना का अण्डा टूट गया उसका मन आत्मिक उड़ान लगाने के योग्य हो गया, जैसे अण्डे का कवच टूट जाने के बाद उसके अंदर का पंछी उड़ान भरने के लायक हो जाता है ।

आवण जाण रहिओ । तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुर सीतल नाम दीओ ।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य को गुरु ने आत्मिक ठंड देने वाला हरि - नाम दे दिया, उसके अंदर से तृष्णा की आग के शोले बुझ गए, उसकी माया की खातिर भटकना समाप्त हो गई ।

जग ते साधू संग भइआ तउ छोडि गए निगहार । जिस की अटक तिस ते छूटी तउ कहा करै कोटवार ।

अर्थः- हे भाई ! जब किसी भाग्यशाली मनुष्य को गुरु का मिलाप हासिल हो जाता है, तब उसके आत्मिक जीवन पर निगाह रखने वाले विकार उसको छोड़ जाते हैं । जब परमात्मा की ओर से आत्मिक जीवन की राह में डाली हुई रुकावट उसकी मेहर से गुरु के द्वारा खत्म हो जाती है तब उन निगाह रखने वालों का सरदार कोतवाल मोह भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

चूका भारा करम का होए निहकरमा । सागर ते कंढै चड़े गुर कीने धरमा ।

अर्थः- हे भाई ! जिन मनुष्यों पर गुरु ने उपकार कर दिया, वह संसार समुंदर में डूबने से बच के किनारे पर पहुँच गए, उनका अनेक जन्मों के किए बुरे कर्मों का कर्ज भाव, विकारों के संस्कारों का संग्रह खत्म हो गया, वे बुरे कर्मों की कैद में से निकल गए ।

सच थान सच बैठका सच सुआउ बणाइआ । सच पूंजी सच बखरो नानक घरि पाइआ । (5-1002)

अर्थः- हे नानक ! कह जिस मनुष्य पर गुरु ने मेहर की, उसने अपने हृदय घर में सदा कायम रहने वाला नाम राशि को पा लिया, सदा कायम रहने वाला नाम सौदा प्राप्त कर लिया, उसने सदा स्थिर हरि - नाम को अपनी जिंदगी का उद्देश्य बना लिया, सदा स्थिर हरि - चरण ही उसके लिए आत्मिक निवास का स्थल बन गए, बैठक बन गई ।

- करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाऐ । मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ।

अर्थः- हे भाई ! साध संगत ने कृपा करके मुझे परमात्मा का नाम दिया, और गुरु के चरणों में लगा के मुझे माया के बंधनो से छुड़ा लिया जिस के कारण मेरे मन से सारा झगड़ा झमेला उतर गया ।

साधसगि चिंत बिरानी छाडी । अहंबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ।

अर्थः- हे भाई ! साध - संगत में आ के मैंने पराई आशा छोड़ दी है । अहंकार, माया के मोह, मन की वासना इन सभी को गड्ढा खोद के दबा दिया सदा के लिए दबा दिया ।

ना को मेरा दुसमन रहिआ ना हम किस के बैराई । ब्रहम पसार पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ।

अर्थः- हे भाई साध - संगत की इनायत से मेरा कोई दुश्मन नहीं रह गया मुझे कोई वैरी नहीं दिखता मैं भी किसी का वैरी नहीं बनता । मुझे गुरु से ये समझ प्राप्त हो गई है कि ये सारा जगत - पसारा परमात्मा खुद ही है, सबके अंदर परमात्मा ने खुद ही खुद को बिखेरा हुआ है ।

सभ को मीत हम आपन कीना हम सभना के साजन । दूर पराइओ मन का बिरहा ता मेल कीओ मेरै राजन ।

अर्थः- हे भाई ! साध - संगत की इनायत से हरेक प्राणी को मैं अपना मित्र समझता हूँ, मैं भी सबका मित्र - सज्जन ही बना रहता हूँ । मेरे मन का परमात्मा से बना हुआ विछोड़ा साध - संगत की कृपा से कहीं दूर चला गया है, जब से मैंने साध - संगत में शरण ली, तब से मेरे प्रभु - पातशाह ने मुझे अपने चरणों का मिलाप दे दिया है ।

बिनसिओ ढीठा अम्रित वूठा सबद लगो गुर मीठा । जलि थलि महिअलि सरब निवासी नानक रमइआ डीठा । (5-671)

अर्थः- हे भाई ! साध - संगत की कृपा से मेरे मन का ढीठ पन समाप्त हो गया है मेरे अंदर आत्मिक जीवन देने वाला नाम जल आ बसा

है गुरु का शब्द मुझे प्यारा लग रहा है। हे नानक ! कह हे भाई ! अब मैंने जल में, धरती में, आकाश में सब जगह बसने वाले सुंदर राम को देख लिया है ।

• ऐसो परचउ पाइओ । करि किृपा दइआल बीठुलै सतिगुर मुझहि बताइओ ।

अर्थः- परमात्मा के साथ मेरी ऐसी सांझ बन गई कि उस माया के प्रभाव से परे टिके हुए दयाल प्रभु ने मेरे ऊपर कृपा की और मुझे गुरु का पता बता दिया ।

जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इह बिसआस होई आइओ । कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ ।

अर्थः- गुरु की सहायता से अब मुझे ये विश्वास हो गया है कि मैं जिधर भी देखता हूँ, हे प्रभु ! मुझे तू ही तू दिखाई देता है । हे भाई ! मुझे यकीन हो गया है कि जब परमात्मा स्वयं जीवों की अरदास विनती सुनता है तो मैं उसके बिना और किस के पास आरजू करूँ, विनती करूँ ?

लहिओ सहसा बंधन गुर तोरे तां सदा सहज सुख पाइओ । होणा सा सोई फुनि होसी सुख दुख कहा दिखाइओ ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु ने जिस मनुष्य के माया के बंधन तोड़ दिए उसका सारा सहम फिक्र दूर हो गया, तब उसने सदा के लिए आत्मिक अडोलता का आनंद प्राप्त कर लिया । उसे यकीन बन गया कि प्रभु की रजा के अनुसार जो कुछ होना था, वही होगा उसके हुक्म के बिना कोई सुख या कोई दुख कहीं भी दिखाई नहीं दे सकता ।

खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुर परदा खोलि दिखाइओ ।

नउ निधि नाम निधान इक ठाई तउ बाहरि कैठै जाइओ ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु ने जिस मनुष्य के अंदर से अहंकार के पर्दे खोल के परमात्मा के दर्शन करा दिए, उसे परमात्मा के सारे खण्डों ब्रहमण्डों का एक ही ठिकाना दिखाई देता है । जिस मनुष्य के हृदय में ही गुरु की कृपा से जगत के नौ ही खजानों का रूप प्रभु नाम खजाना आ बसे, उसे बाहर भटकने की जरूरत नहीं रहती ।

ऐकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ । कहु नानक भरम गुर खोई है इव ततै तत मिलाइओ । (5-205)

अर्थः- हे भाई ! जैसे एक सोने से सुनियारे ने गहनों की अनेक किस्मों के बनतर रूप बना दिए वैसे ही परमात्मा ने कई किस्म की ये जगत रचना रच दी है । हे नानक ! कह गुरु ने जिस मनुष्य का भ्रम भुलेखा दूर कर दिया, उसको उसी तरह का हरेक तत्व मूल तत्व प्रभु में मिलता दिखता है जैसे अनेक रूपों के गहने फिर सोने में ही मिल जाते हैं ।

- हरि दर सेवे अलख अभेवे निहचल आसण पाइआ । तह जनम न मरण न आवण जाणा संसा दूख मिटाइआ ।

अर्थः- जो मनुष्य परमात्मा के दर पर कब्जा करके रखता है, जो अदृष्ट है और जिसका भेद नहीं पाया जा सकता, वह मनुष्य ऐसा आत्मिक ठिकाना हासिल कर लेता है जो कभी डोलता नहीं । उस आत्मिक ठिकाने पर पहुँच के जनम मरन के चक्कर खत्म हो जाते हैं मनुष्य हरेक किस्म के सहम व दुख मिटा लेता है ।

चित्र गुपत का कागद फारिआ जमदूता कछू न चली । नानक सिख देई मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ।

अर्थः- उस आत्मिक ठिकाने पे पहुँचा मनुष्य धर्मराज के बनाये हुए चित्र गुप्त का लेखा फाड़ देता है भाव, कोई गलत कर्म करता ही नहीं जिसे चित्र गुप्त लिख सके, यमदूतों का भी कोई जोर उस पर नहीं चलता । इस वास्ते हे प्यारे मन ! नानक तुझे शिक्षा देता है कि परमात्मा के नाम का सौदा कर, यही सौदा नफे वाला है ।

मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि संता संगि निवासो । मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि नाम जपत परगासो ।

अर्थः- हे प्यारे मन ! हे मित्र मन ! गुरमुखों की संगति में उठना बैठना बना । हे प्यारे मन ! हे मित्र मन ! गुरमुखों की संगति में परमात्मा का नाम जपने से अंदर आत्मिक प्रकाश हो जाता है ।

सिमरि सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ । पुरबे कमाए स्रीरंग पाए हरि मिले चिरी विछुंनिआ ।

अर्थः- सुख पहुँचाने वाले मालिक प्रभु को स्मरण करने से सारी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं, पहिले जन्म में की नेक कमाई के संस्कारों के अनुसार चिरों से विछुड़ा लक्ष्मी पति प्रभु फिर मिल पड़ता है ।

अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसआसो । नानक सिख देइ मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ।

अर्थः- हे भाई गुरमुखों की संगति करने से मन में एक निश्चय बन जाता है कि परमात्मा जीवों के अंदर बाहर हर जगह व्यापक है । हे प्रीतम मन ! नानक तुझे शिक्षा देता है गुरमुखों की संगति में टिका कर ।

मन पिआरिआ जिउ मित्रा हरि प्रेम भगति मन लीना । मन पिआरिआ जिउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ।

अर्थः- हे मेरे प्यारे मन ! हे मेरे मित्र मन ! जिस मनुष्य का मन परमात्मा की प्रेमा भक्ति में मस्त रहता है, हे प्यारे मित्र मन ! वह मनुष्य परमात्मा को मिल के ऐसे आत्मिक जीवन हासिल करता है जैसे मछली पानी को मिल के जीती है ।

हरि पी आघाने अंमृत बाने सब सुखा मन वुठे । स्रीधर पाए मंगल गाए इछ पुंनी सतिगुर तुठे ।

अर्थः- सतिगुरु की प्रसन्नता का पात्र बन के जो मनुष्य परमात्मा की महिमा की आत्मिक जीवन देने वाली वाणी रूप पाणी पी के माया की प्यास से तृप्त हो जाता है, उसके मन में सारे सुख आ बसते हैं, वह मनुष्य लक्ष्मी पति प्रभु का मेल हासिल कर लेता है, प्रभु के महिमा के गीत गाता है, उसकी सारी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं ।

लड़ि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ सरबस ठाकुर दीना ।
नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मन लीना ।

(5-79-80)

अर्थः- हे नानक ! जिस मनुष्य को संत जनों ने परमात्मा के स्मरण की शिक्षा समझा दी है, उसका मन परमात्मा की प्रेमा भक्ति में लीन रहता है, उसे ठाकुर ने अपने पल्ले से लगा लिया है ठाकुर की ओर से उसे मानो नौ खजाने मिल गए हैं क्योंकि, ठाकुर ने उसको अपना नाम दे दिया है जो मानो, जगत का सारा ही धन है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"